भगवद् गीता का ज्ञान – (3)

" ईश्वर-चिंतन से मनुष्य का उद्धार और विषय-चिंतन से पतन, दोनों निश्चित हैं "

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के 12वें अध्याय के छठे और सातवें श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन के माध्यम से प्राणी-मात्र को बताते हैं कि ईश्वर का चिंतन (ईश्वर की भक्ति) करने वाले मनुष्यों का स्वयं ईश्वर ही शीघ्र उद्धार करते हैं -

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः। अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥१२:६॥

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् । भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥१२:७॥

अर्थात - "हे पार्थ! जो मेरे (अर्थात ईश्वर के) प्रति समर्पित भक्त-जन सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें (अर्थात ईश्वर में) अर्पण करके मुझको (अर्थात ईश्वर को) ही अनन्य भक्ति-योग से चिंतन करते हुए भजते हैं, उन मुझमें (अर्थात ईश्वर में) चित्त लगाने वाले भक्तों का मृत्यु-रूप संसार-सागर से मैं अविलम्ब (शीघ्र) उद्धार करने वाला होता हूँ (अर्थात ईश्वर उन भक्तों का बिना विलम्ब किये उद्धार करते हैं)।" **(गीता – 12:6, 12:7)**

- दूसरी ओर, गीता के दूसरे अध्याय के 62वें तथा 63वें श्लोकों में श्रीकृष्ण सांसारिक विषयों (विषय-भोगों) के चिंतन के भयानक परिणाम समझाते हुए कहते हैं –

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते। संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥२:६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥२:६३॥

अर्थात - "विषयों का चिंतन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति पैदा हो जाती है। आसक्ति से उन विषयों की कामना (तीव्र इच्छा) उत्पन्न होती है और कामना से (कामना पूर्ण न होने से अथवा उसमें विघ्न पड़ने से) क्रोध पैदा होता है। क्रोध से (अर्थात क्रोध आने पर) सम्मोह (मूढ़ भाव) उत्पन्न हो जाता है। मूढ़ भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति-भ्रम से बुद्धि (विवेक) का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश हो जाने से उस पुरुष का पतन हो जाता है (अर्थात मनुष्य अपने चरित्र, प्रतिष्ठा और स्थान से गिर जाता है)।" **(गीता – 2:62, 2:63)**

भावार्थ इस प्रकार है -

जो मनुष्य अपने सम्पूर्ण कर्मों को ईश्वर में समर्पित करते हुए उसी का चिंतन करता है, ईश्वर उस का उद्धार बिना विलम्ब करते हैं। परन्तु जिस मनुष्य की आसक्ति विषयों में पैदा हो जाती है, उस पुरुष का धीरे-धीरे अपने चरित्र, प्रतिष्ठा और स्थान से पतन हो जाता है।